9

अहो ! यह उपदेश मांही

अहो ! यह उपदेश मांही, खूब चित्त लगावना ।
होयगा कल्याण, सुख अनन्त बढ़ावना ।।टेक॥
रहित दूषण, विश्व भूषण देव, जिनपति ध्यावना ।
गगनवत् निर्मल अचल मुनि, तिनहिं शीश नवावना ।।1॥
अहो यह उपदेश.....

धर्म अनुकम्पा प्रधान, न कोई जीव सतावना ।
सप्त तत्त्व परीक्षा करि, हृदय श्रद्धा लावना ।।2॥
अहो यह उपदेश....

पुद्गलादिक ते पृथक्, चैतन्य ब्रह्म लखावना ।
या विधि विमल सम्यक्त्व धरि शंकादि पंक बहावना ।।3॥
अहो यह उपदेश....

रुचैं भव्यनि को वचन जे, शठन को न सुहावना ।
चन्द्र लखि जिमि कुमुद विकसै, उपल नहिं विकसावना ।।4॥
अहो यह उपदेश....

'भागचन्द' विभाव तजि, अनुभव स्वभावित भावना ।
या बिन शरण न अन्य, जगतारण्य में कहुं पावना ।।5॥
अहो यह उपदेश.....

अहो आत्मन! तुम भगवान की वाणी सुनने में बहुत मन लगाना, इसी से ही तुम्हारा कल्याण होगा और अनंत सुख की प्राप्ति होगी॥टेक॥

हे आत्मन् ! जो दोषों से रहित हैं, संपूर्ण विश्व के आभूषण के समान हैं – ऐसे जिनदेव का ही ध्यान करना और जो आकाश के समान निर्मल हैं, अचल हैं – ऐसे मुनिराजों को ही नमस्कार करना ॥1॥

हे चेतनराम! जैन धर्म दया की प्रधानता वाला है। कभी भी किसी जीव को दुखी मत करना और सात तत्वों की परीक्षा करके, उसमें अंतरंग से श्रद्धा करना ॥2॥

हे आत्मन्! तुम पुदगल द्रव्यों से भिन्न अपने चैतन्य आत्मा का दर्शन करना और इस विधि से निर्मल सम्यग्दर्शन को धारणकर, शंका आदि मल का परिष्कार करना ॥3॥

हे चेतन! जिस प्रकार चंद्रमा को देखकर कमल खिल जाता है परंतु पत्थर नहीं खिलता उसी प्रकार भगवान जिनेंद्र देव की वाणी भव्य जीवों को ही पसंद आती है, यह दुर्जनों को पसंद नहीं आती ॥4॥

कविवर भागचंद जी कहते हैं कि हे चेतन! तुम विभाव का त्याग करना और अपने चैतन्य आत्मा का अनुभव करना। अपनी आत्मा की शरण प्राप्त किए बिना संसार रूपी वन में कोई सहायक नहीं है ॥5॥